विचार बिन्दु

रोगियों के लिए भलीभांति सोचकर निश्चित की गयी औषधि नाम उच्चारण करने मात्र से किसी को निरोगी नहीं कर सकती। –हितोपदेश

बढ़ती जनसंख्या भारत के विकास की सबसे बड़ी चुनौती

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष ने हाल ही में विश्व जनसंख्या स्थिति रिपोर्ट 2023 जारी की है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत वर्ष 2023 के मध्य तक विश्व का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन जाएगा और भारत की जनसंख्या चीन से भी अधिक हो जाएगी। जुलाई 2023 तक चीन की 142.57 करोड़ जनसंख्या की तुलना में भारत की जनसंख्या 142.86 करोड़ तक पहुँचने का अनुमान है। संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि अगर आबादी इसी रफ्तार से बढ़ती रही 2060 के दशक की शुरुआत में भारत की जनसंख्या लगभग 170 करोड़ तक पहुंच जाएगी। हालांकि संयुक्त राष्ट्र ने यह भी कहा है कि इसके बाद जनसंख्या में गिरावट आने लगेगी और आबादी में 12 प्रतिशत की गिरावट आने का अनुमान है। लेकिन गिरावट के बाद भी भारत पूरी सदी में दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बना रहेगा। जनसंख्या वृद्धि आज एक वैश्विक समस्या बन चुकी है। जनसंख्या विस्फोट ने न केवल विकास को प्रभावित किया है अपितु इससे बेरोजगारी, भुखमरी और अशिक्षा जैसी भयावह समस्याओं ने विकराल रूप ले लिया हैं। ऐसे में जनसंख्या नियंत्रण एक जरूरी कदम हो जाता है। भारत में जनसंख्यां विस्फोट का असर अब दिखाई देने लगा है। हमारी सुविधाएँ सिकुड़ने लगी है और दैनंदिन जीवन मुश्किल में पड़ने लगा है। भारत की राजधानी जनसंख्यां विस्फोट से उबलने लगी है। देश के मेट्रो शहरों का हाल भी बहुत खराब है। बड़े और छोटे शहरों में आये दिन लगने वाले ट्रैफिक जाम ने जीना हराम कर दिया है। वाहन रेंगने की स्थिति में पहुँच गए है। लोगों को पैदल चलना अधिक मुनासिब लग रहा है। बढ़ती जनसंख्या की दुश्वारियां सिर चढ़कर बोलने लगी है। भूखों की संख्यां निरंतर बढ़ रही है। विकास कार्य सिकुड़ रहे है। रोटी, कपडा और मकान की बुनियादी सुविधाओं की बात करना बेमानी हो गया है। विकास का स्थान विनाश ने ले लिया है। भारत की सबसे बड़ी समस्या है जनसंख्या विस्फोट। तेजी बढ़ती हुई जनसंख्या ने देश के समक्ष अनेक विकराल समस्याएं खड़ी कर दी हैं, जिनका सामाधान तब तक सम्भव नहीं जब तक जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश न लगा दिया जाए। यदि जनसंख्या वृद्धि की इस दर को रोका न गया तो भीषण परिणाम भुगतने पड़ेगे। तीव्र गति से बढ़ती हुई इस जनसंख्या के लिए भोजन, वस्त्र और आवास जैसी सुविधाओं को जुटा पाना भारत जैसे सीमित साधनों वाले देश के लिए सम्भव नहीं है।

आज दुनिया की एक बड़ी आबादी भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास समेत बुनियादी सुविधाओं से वंचित है और इसकी एक प्रमुख वजह अनियंत्रित आबादी है। जनसंख्या वृद्धि भारत सहित दुनिया के कई देशों विशेषकर विकासशील देशों में गंभीर समस्या का रूप ले चुकी है। देश और दुनिया में लगातार बढ़ती जनसँख्या ने विकास के सारे मार्ग अवरुद्ध कर दिए है। कोई ठोस वैश्विक नीति नहीं होने का खामियाजा हर व्यक्ति को उठाना पड़ रहा है। ऐसे में समूचे विश्व का ध्यान भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी पर केंद्रित हो रहा है जो अपने कठोर फैसलों के लिए जाने जाते है। मोदी इस समय एक गलोबल लीडर के रूप में स्थापित हो चुके है। जनसँख्या विशेषज्ञों का मानना है यदि भारत में कानून के जरिये बढ़ती जनसँख्या पर लगाम लगाई जाती है तो दुनिया भारत का अनुसरण कर सकती है।

लगातार बढ़ती आबादी के चलते बड़े पैमाने पर बेरोजगारी तो पैदा हो ही रही है, कई तरह की अन्य आर्थिक और सामाजिक समस्याएं भी पैदा हो रही हैं । भारत के सामने अनेक समस्याएँ चुनौती बनकर खड़ी हैं। जनसंख्या-विस्फोट उनमें से सर्वाधिक है। एक अरब भारतियों के पास धरती, खनिज, साधन आज भी वही हैं जो 50 साल पहले थे परिणामस्वरूप लोगों के पास जमीन कम, आय कम और समस्याएँ अधिक बढ़ती जा रही हैं।

भारत में मोदी सरकार के लिए जनसँख्या कानून बनाने का यह सही समय है। देश के विकास को पटरी पर लाने और खुशहाल भारत के सपने को साकार करने के लिए देश में जनसँख्या कानून को अमली जामा पहनने की आज महत्ती जरुरत है। एक या दो बच्चों के आदर्श परिवार को अपनाकर ही हम देश की विभिन्न ज्वलंत समस्याओं का समाधान कर सकते है। इसके लिए लोगों को जागरूक और शिक्षित कर अपने भले बुरे का ज्ञान करना जरूरी है तभी हम अपने उद्देश्य में सफल हो सकते है।

भारत विश्व का दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। आजादी के समय भारत की जनसंख्या 33 करोड़ थी जो आज चार गुना तक बढ़ गयी है। 2011 की जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक भारत की जनसंख्या 121 करोड़ है। जबकि जनसंख्या वृद्धि दर संबंधी आंकड़ों पर नजर रखने वाली वेबसाइट वर्ल्डोमीटर के अनुसार 2021 में भारत की जनसंख्या लगभग 139 करोड़ हो चुकी है। परिवार नियोजन के कमजोर तरीकों, अशिक्षा, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के अभाव, अंधविश्वास और विकासात्मक असंतुलन के चलते आबादी तेजी से बढ़ी है।

हमारी आबादी में अभी भी हर दिन पचास हजार की वृद्धि हो रही है। इतनी बड़ी जनसंख्या को भोजन मुहैया कराने के लिए यह आवश्यक है कि हमारा खाद्यान्न उत्पादन प्रतिवर्ष 54 लाख टन से बढे जबकि वह औसतन केवल 40 लाख टन प्रतिवर्ष की दर से ही बढ़ पाता है। जनसंख्या वृद्धि के दो मूल कारण अशिक्षा एवं गरीबी है। लगातार बढ़ती आबादी के चलते बड़े पैमाने पर बेरोजगारी तो पैदा हो ही रही है, कई तरह की अन्य आर्थिक और सामाजिक समस्याएं भी पैदा हो रही हैं । भारत के सामने अनेक समस्याएँ चुनौती बनकर खड़ी हैं। जनसंख्या-विस्फोट उनमें से सर्वाधिक है। एक अरब भारतियों के पास धरती, खनिज, साधन आज भी वही हैं जो 50 साल पहले थे परिणामस्वरूप लोगों के पास जमीन कम, आय कम और समस्याएँ अधिक बढ़ती जा रही हैं।

जनसंख्या वृद्धि एक नयी चुनौती बनकर हमारे सामने आई हैं और आज भी इस पर काबू पाने में सरकार को कठिनाई हो रही है। जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम देश को भोगने पड़ रहे हैं। बढ़ती जनसंख्या की दुश्वारियां सिर चढ़कर बोलने लगी है। भूखों की संख्यां निरंतर बढ़ रही है। विकास कार्य सिकुड़ रहे है। रोटी, कपडा और मकान की बुनियादी सुविधाओं की बात करना बेमानी हो गया है।

विकास का स्थान विनाश ने ले लिया है। अधिक जनसंख्या के कारण बेरोजगारी की विकराल समस्या उत्पन्न हो गयी है। लोगों के आवास के लिए कृषि योग्य भूमि और जंगलों को उजाड़ा जा रहा है। इससे बचने का एक मात्र उपाय यही है की हम येन केन प्रकारेण बढ़ती आबादी को रोके। अन्यथा विकास का स्थान विनाश को लेते अधिक देर नहीं लगेगी।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 27 जुलाई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, रेवती नक्षत्र दिन 1:00 तक, धृति योग रात्रि 10:44 तक, विष्टि करण दिन 10:25 तक, चन्द्रमा आज दिन 1:00 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। रवियोग दिन 1:00 तक है। आज भद्रा दिन 10:25 तक रहेगी। आज शीतला सप्तमी है। पंचक दिन 1:00 तक रहेंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:33 से 9:13 तक, चर 12:33 से 2:13 तक, लाभ-अमृत 2:13 से 5:34 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:52, सूर्यास्त 7:14

मेष
घर-परिवार के खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। अनावश्यक समय खराब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

वृष
आर्थिक/वित्तिय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात मित्रों/रिश्तेदारों में समय खराब हो सकता है।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

कांवड़ यात्रा में पहचान का सुप्रीम संकट

प्रो, वीर बहादुर सिंह

पृथ्वी पर ऐसी कोई वस्तु, वनस्पति, जीव, प्राणी, जीवाणु, विषाणु, पक्षी, पहाड़, नदियां, नहरें, बाग़, सड़क, शहर, गांव यहाँ तक कि जीव-जंतुओं, पशुओं और प्राणीओं के मल मूत्र, इमारतें, कागज़, कॉपी, किताब, इत्यादि किसी पर गौर करिये, सब का नाम होता है। नाम पहचान का मुख्य संकेत अथवा द्योतक है। वैज्ञानिकों ने पेड़ पौधों के बोटैनिकल नाम और जीवित प्राणिओं के जूलॉजिकल नाम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रख दिए हैं। श्री कृष्ण ने तो सैकड़ों गायों के नाम रख लिए थे और उसी नाम से उन्हें बुलाते थे। पहचान का सिलसिला किसी चीज़ के आरम्भ होते ही शुरू हो जाता है। मनुष्यों में बच्चा जन्म लेने के उपरांत उसका पहला संस्कार नाम करण ही होता है। वहीं से मनुष्य की पहचान शुरू हो जाती है जो जीवन पर्यन्त और मरणोपरांत भी उपयोग में आती है, उस प्राणी के लिए फिर स्वर्गीय लिखा या बोला जाता है। कहने का तात्पर्य है कि एक बार पहचान बनने पर फिर ताउम्र वही बनी रहती है और उसके साथ जन्म दिन भी। फिर चाहे कोई आधार कार्ड बनबाए, अथवा अन्य कोई और कार्य यथा बैंक अकाउंट, मकान, प्रॉपर्टी, शिक्षा इत्यादि एक बार बनी पहचान सदैव काम आती है। अब जरा गौर करिये यदि ऐसी पहचान न होती, तो क्या होता? सभी आदमी बिना नाम के, सभी औरतें बिना नाम की, सभी शहर, सड़क, गली-मोहल्ला, बाजार, ऑफिस यहाँ तक न्यायलय भी, पोस्ट ऑफिस, बैंक इत्यादि मेरे विचार से सब कुछ अस्तव्यस्त रहता। कोई नियम कानून काम नहीं करते। अव्यवस्था का आलम ही सब जगह दृष्टिगोचर होता। दिल्ली जाने वाले जयपुर लखनऊ और न जाने किस जगह पहुंच जाते क्योंकि किसी स्थान का नाम ही नहीं होता।

अब देखते हैं कि अभी हो क्या रहा है? शहरों में सड़कों के नाम, गलिओं के नाम, बाज़ारों के नाम, दुकानों के नाम, दूकान मालिक का नाम और मोबाइल नंबर, साथ में क्या वस्तुएं वहां बिकती हैं उनका नाम, होज़री, कांच, प्लास्टिक, फेब्रिक, रेडीमेड गारमेंट्स, शूज, टेलर, आदि सभी लोग नाम लिखते हैं ताकि ग्राहक को सुविधा रहे, पहचान में दिक्कत नहीं आये। सभी सरकारी कार्यालयों, बैंकों और सभी स्कूल व् अन्य शैक्षिक संस्थान, बिना नाम के कोई नहीं मिलेगा। पुलिस और सभी फॉजी अफसर अपने नाम की पीतल या प्लास्टिक की नाम प्लेट ड्रेस में जेब पर लगाते हैं चाहे वे किसी धर्म, जाति के हों। इस पृथ्वी पर पहचान इसलिए बहुत महत्वपूर्ण है और पहचान के लिए नाम।

उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरयाणा, उत्तराखंड, बिहार आदि अनेक जगहों से ग्रामीण कांवड़ लेकर गंगा जी तक पैदल यात्रा करते हैं, मजे की बात ये है कि वे कांवड़ को जमीं पर नहीं रखते। लौटती बार उन्हीं कलशों में गंगा जल भर कर वापिस लौटते हैं। यह काम कांवड़िये बहुत पवित्रता और आत्मीयता से करते हैं। इस यात्रा में शुद्धता का बहुत ख्याल रखा जाता है। मैं अपनी शिक्षा काल में लगभग 7 वर्ष (1951 से 1958) एटा शहर उत्तर प्रदेश में रहा, वहां मैंने जीवन में पहली वार काँवड़ देखी जो जीटी रोड से कासगंज होते हुए सोरों या अन्य किसी धार्मिक तीर्थ तक ले जाई जाती है। इसलिए मुझे पता है किस ईश्वरीय प्रेरणा और लग्न से ग्रामीण कांवड़ ले जाते हैं। उसकी तह में जाने पर ही मालूम होता है कि ग्रामीण किस निष्ठां और सात्विक भावना से यह कार्य संपन्न करते हैं। वेशभूषा से कावड़िए गरीब ही लगते हैं लेकिन धार्मिक जज्बा उनमे चरम पर होता है। पहले प्रशासन कभी भी उन्हें नियंत्रित नहीं करता था, जब से राजनितिक लोगों का नैतिक पतन हो गया है उपद्रवी उक्त यात्रा में विघ्न उत्पन्न करने का प्रयास करने लगे हैं। ये धूमिलता या विकृति समाज में मुसलमानो में अशिक्षा के कारण हिंदू दोगलों ने अपनी राजनैतिक रोटियां सेकने के लिए उन्हें सनातनिओं के विरुद्ध भड़का दिया है। ऐसी स्थिति से निबटने के लिए योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री जो एक मठ के साधु भी हैं, इस स्थिति को भांपने में कहीं चूक रही करते और सभी ऐतिहादिक कदम पहले से उठा लेते हैं। एक अनुभवी मुख्य मंत्री में यह गुण तो आवश्यक है।

मैंनें सुना है कि पार्टी हाई कमान उनसे नाराज़् है और उन्हें पद से च्युत करने की फिराक में है। मोदी जी का ग्राफ लोकसभा चुनाव में ही पहले नीचे आ चुका है रही-सही कसर प्रदेश में योगी जी को हटाने से पूरी हो जाएगी। 2029 अभी बहुत दूर है अभी बजट से भी मध्यम वर्ग त्रस्त है। मेरा मानना है कि मोदी जी को अपनी सोच और कार्य शैली में बदलाव करना चाहिए तो उनकी अंतर देशीय लोकप्रियता बनी रह सकती है, बाकी मुझे संशय है कि वे पुनः लौट सकेंगे? मैं स्वयं पूर्व में उनकी पार्टी का पक्षधर रहा हूँ। उन्हें योगी जी को अपना भरपूर समर्थन देना चाहिए। मेरा मानना है कि योगी जी समय से पूर्व मोदी जी के लिए कोई अवरोध उत्पन्न नहीं करेंगे यह विशेषता उनके खून में है। मोदी जी स्वयं जनता से काफी दूर हो चुके हैं। आज उत्तरप्रदेश में आम जनता पूर्व के किसी भी मुख्यमंत्री काल की अपेक्षा अधिक प्रसन्न और स्वतंत्र महसूस कर रही है।

कुछ विचार देश के न्यायाधीशों के लिए, वे नाम पट्टिका जैसे छोटे महत्वहीन मसलों की पिटिशन सुनने के लिए सहमति नहीं दे तो शोभायमान होगा। काँवड यात्रिओं के लिए मुख्यमंत्री के निर्देश कि रास्ते के सभी दुकानदार अपनी दुकान पर नाम पट्टिका लगाएं। जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने स्थगन आदेश दे दिया। कांवड़ यात्रा कुछ दिन की ही होती है मैं स्वयं इससे हतप्रभ हूँ। उसमे स्थगन के कुछ दिन यात्रिओं को राहत नहीं मिलेगी और यात्रा समाप्त हो जाएगी। इस स्थगन से मामला पेचीदा हो गया। मैंने इसे इसलिए सुप्रीम संकट की संज्ञा दी है। ऐसे मसले लोअर कोर्ट के लिए ही छोड़े जा सकते हैं। साथ ही लंबित पड़े अनेक मसले निर्णित करने की सर्वोच्च न्यायलय की प्राथमिकता होनी चाहिए।

मैंने इस लेख में अपने सभी विचार स्पष्ट कर दिए हैं अब पाठक पढ़ें और विचार करें कि पहचान का मुद्दा क्या सुप्रीम कोर्ट को सुनना चाहिए?

–प्रो, वीर बहादुर सिंह,
पूर्व अधिष्ठाता एवं कुलपति,
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
उदयपुर।

पुस्तक समीक्षा : "कालजयी भारतीय ज्ञान" प्राचीन ग्रंथ व वेद तथ्यपरक व विज्ञान आधारित

लेखक भगवती प्रकाश शर्मा ने अपनी पुस्तक कालजयी भारतीय ज्ञान में इन तार्किक जानकारियों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। भारतीय संस्कृति अनुपम है और पूरी दुनिया में सबसे विशिष्ट होने के कारण सर्वस्वीकार्य भी है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में लिख गये तथ्य आज के समय में भी प्रमाणिक व व्यावहारिक सिद्ध हो रहे हैं। वेदों, पुराणों, ब्राह्मण ग्रंथों, उपनिषदों, आरण्यकों, रामायण, महाभारत एवं प्राचीन सनातन हिंदु ग्रंथों में उन्नत आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के संदर्भ को विवेचित किया गया है वे हमारे जीवन दर्शन और विचारों में परिलक्षित होते हैं। भारतीय ज्ञान-परम्परा व चिंतन का एकमेव ध्येय ही विश्वमंगल है। प्राचीन भारतीय ज्ञान कोई धर्म सापेक्ष कर्मकांड न होकर सार्वभौम मानवोपयोगी ज्ञान की निधि है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम व ज्ञानप्रधान संस्कृति है। यूनेस्को ने ऋग्वेद की 380०वर्ष प्राचीन 3०पांडुलिपियों को विश्व विरासत में सम्मिलित करते हुए माना कि ऐसी सुदीर्घ, अक्षुण्ण व पुरातन पांडुलिपियाँ विश्व में अन्यत्र दुर्लभ हैं। ज्ञान प्रधानता के संबंध में अमेरिकी इतिहासविद् मार्क ट्वेन के अनुसार आज के आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की भी कई जानकारियाँ प्राचीन भारतीय हिंदू वाड्मय में पहले से मिल जाती है और यह भी संभव है कि भविष्य में होने वाले नवीन अन्वेषणों व आविष्कारों के भी कई संदर्भ प्राचीन भारतीय शास्त्रों में मिल जाए। इन तार्किक जानकारियों को सरल भाषा में लेखक भगवती प्रकाश शर्मा ने अपनी पुस्तक "कालजयी भारतीय ज्ञान" में प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में भारतवर्ष के समृद्ध, समुन्नत, सर्वमान्य ज्ञान परम्परा का एक वृहद् व व्यावहारिक विश्वकोश सम्मिलित किया गया है। ब्रह्मांड में सम्पूर्ण खाली स्थान में वैज्ञानिकों के अनुसार एक आश्चर्यजनक ऊर्जा विद्यमान है, जिसे खगोल वैज्ञानिक डार्क एनर्जी कहते हैं। वर्ष 1998 के बाद पता चला कि इस डार्क एनर्जी को ब्रह्मांड का विस्तार का कारण जाना जा रहा है। ब्रह्मांड में विद्यमान 2०खरब आकाश गंगाओं व उनके मध्य के डार्क मैटर का समग्र अंश 26 प्रतिशत माना जाता है। ऐसा कहा जा सकता है कि ब्रह्मांड में सम्पूर्ण दृश्य भाग या पदार्थ एक चौथाई अंश है व तीन चौथाई अंश अदृश्य डार्क मैटर का है इन तथ्यों को वेदों में भी इसी रूप में विवेचित किया है।

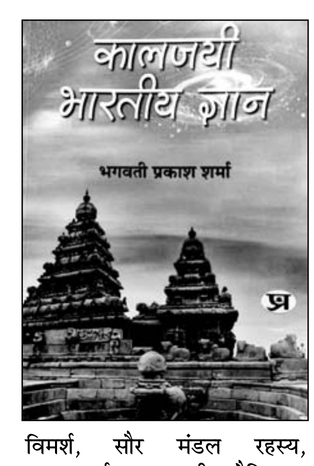

पुस्तक में ब्रह्मांड की श्याम ऊर्जा, ब्रह्मांड की उत्पत्ति का वैज्ञानिक विमर्श, सौर मंडल रहस्य, गुरूत्वाकर्षण का प्राचीन वैदिक व अन्य शास्त्रों का संदर्भ ज्ञान, प्रकाश की गति का वैदिक विमर्श, ग्रहण का वैज्ञानिक विवेचन आदि की शस्त्रोक्त व्याख्या की गई है। शर्मा ने वेदों में लोकतंत्र, गणराज्य एवं राष्ट्र की प्राचीन संकल्पना, राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव का वैदिक विमर्श, राजपद व उसकी मर्यादाएँ, उद्योग, व्यापार व वाणिज्य लोक वित्त के प्राचीन संदर्भ आदि को सतर्क प्रस्तुत किया है। उन्नत शब्द विज्ञान, उन्नत भौतिकीय, रासायनिक व गणितीय ज्ञान के संदर्भो, वैदिक सूर्योपासना के वैश्विक प्रसार और अमेरिकी पुरावशेषों पर भारतीय संस्कृतिक प्रभाव के संदर्भो का भी विवेचन किया गया है। पुस्तक में दिये गये तर्कों के आधार पर प्राचीन भारतीय ज्ञान-परम्परा सार्वभौम मानव कल्याण व सम्पूर्ण प्रकृति के संरक्षण व संवर्द्धन पर केन्द्रित है। उन्नत ज्ञान की दृष्टि से इसमें आधुनिक खगोल शास्त्र, सौरमंडल, अंतरिक्ष विज्ञानव भू-विज्ञान सहित ब्रह्मांड रचना संबंधी अनेक आधुनिक जानकारियाँ प्रचुरता में मिल जाती है। शरीर रचना, स्वास्थ्य विज्ञान और गणित सहित भौतिक विज्ञान के भी अनेक तथ्य आज वेद, वेदांग आरण्यक, उपनिषद्, ब्राह्मण, साहित्य, सूत्र, संहिताओं व अन्य संस्कृत ग्रंथों में प्रचुरता से मिल रहे हैं। अर्थशास्त्र व नागरिक शास्त्र सहित विविध सामाजिक विज्ञानों के साथ ही आधुनिक प्रौद्योगिकी एवं व्यापार-वाणिज्य के उन्नत सिद्धांत भी प्राचीन शास्त्रों में मिलते हैं। वेदों में प्रकाश की गति से लेकर हृदय के विद्युत स्पंदनों तक का ज्ञान और ब्रह्मांड की श्याम ऊर्जा से लेकर पाई के सूक्ष्म मान तक के अगणित सूत्र हैं। धातु विज्ञान से विमान शास्त्र तक के अनेक उन्नत विषय उनमें हैं। पृथ्वी की धुरी के स्पंदन से लेकर हृदयगत स्मृति जैसे सभी विषय अत्यन्त महत्व के हैं।

सूर्य न अस्त होता है न उदय-ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है कि अंतरिक्ष में सूर्य कभी न उदित होता है न अस्त ही होता है। सूर्य जब भूमंडल के एक भाग को प्रकाश युक्त करता है तब दूसरे भाग का उसके सम्मुख होने पर वह दस दूसरे भाग को प्रकाशित करता है और घूमकर उल्टी ओर जा चुके भाग में अंधकार होने से वहाँ रात्रि होती है।

राजा या राष्ट्र प्रमुख की मातृभूमि पर सर्वस्व अर्पण शपथ मैं अपनी मातृभूमि व उसके दुख व कष्टों से मुक्ति के लिए स्वयं सब प्रकार के कष्ट सहने को तत्पर हूँ। वे कष्ट कैसे भी, कहीं से आवें और कब आवें, मुझे इसकी कोई चिंता या भय नहीं है। युजर्वेद में राष्ट्र की व्याख्या-ऐसा जन-समूह जो एक सुनिश्चित भूमिखंड में रहता है, संसार में व्याप्त व इसे चलाने वाले परमात्मा अथवा प्रकृति के अस्तित्व को स्वीकार करता है, बुद्धि को प्राथमिकता देता है और विद्वज्जनों का आदर करता है तथा जिसके पास अपने देश को बाहरी आक्रमण और आंतरिक, प्राकृतिक आपत्तियों से बचाने एवं सभी के योगक्षेम की क्षमता हो, वह एक राष्ट्र है। चारों वर्णो से युक्त मंत्रिमंडल-महाभारत सहित कई ग्रंथों में मंत्रिमंडल में चारो वर्णो के समावेश को आवश्यक बतलाया है। महाभारत शांति पर्व में 37 सदस्यीय मंत्रिमंडल में 3 शूद्र व 1 सूत आवश्यक बतलाए हैं।

चिकित्सक शिक्षकों ने हॉस्पिटल परिसर के बाहर पकौड़े तले

भीलवाड़ा, (निसं)। राजमेस मेडिकल कॉलेज के चिकित्सक शिक्षकों ने हड़ताल के पांचवें दिन शुक्रवार को सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए एमजी हॉस्पिटल परिसर के बाहर पकौड़े तले। इस बीच, हड़ताली डॉक्टर्स ने सोमवार को आंदोलन को और उग्र करने की चेतावनी दी है।

डॉक्टर चेतन कुमार ने कहा कि शिक्षक चिकित्सकों की हड़ताल का आज पांचवां दिन है, लेकिन सरकार की ओर से अब तक कोई सुनवाई नहीं हुई। हड़ताली चिकित्सकों ने जयपुर कूच कर हैडक्वार्टस के बाहर भी सरकार के अगेंस्ट प्रदर्शन किया था। कल चिकित्सकों ने हवन करके, जबकि आज पकौड़े तलकर सरकार को अपना दु:ख व्यक्त किया कि, अगर सरकार ने मांगें नहीं मानी तो डॉक्टर्स पकौड़े तलने के लिए बाध्य हो जायेंगे। उन्होंने कहा कि कल डॉक्टर्स क्रमिक अनशन करेंगे। डॉक्टर चेतन ने कहा कि जिला अस्पताल में जो भी डॉक्टर्स काम कर रहे हैं, वो भी काली पट्टी बांधकर

राजमेस मेडिकल कॉलेज के चिकित्सक शिक्षकों ने सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए एमजी हॉस्पिटल परिसर के बाहर पकौड़े तले।

दु:ख व्यक्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हड़ताल से पहले अस्पताल में जहां 30-30 सर्जरी होती थी, वहां आज 8-10 सर्जरी ही हो रही है, इससे मरीजों को दिक्कतें आ रही है। डॉक्टर्स ने कहा कि अगर सरकार ने हमारी मांगें नहीं मानी तो सोमवार से और उग्र आंदोलन किया जायेगा।

अवैध कोयला भट्टियों को लेकर भीलवाड़ा जिला प्रशासन सख्त

करेड़ा के ग्राम रामपुरिया, ग्राम पंचायत नारेली में अवैध कोयला भट्टियों को ध्वस्त किया।

भीलवाड़ा, (निसं)। उपखण्ड क्षेत्र करेड़ा के ग्राम रामपुरिया, ग्राम पंचायत नारेली में शुक्रवार को 6 अवैध कोयला भट्टियों को प्रशासन द्वारा ध्वस्त किया गया। उपखंड अधिकारी बंशीधर योगी ने बताया कि गुरुवार को जिला कलक्टर नमित मेहता द्वारा कलेक्ट्रेट में आयोजित राजस्व अधिकारियों की बैठक में बिलानाम भूमि पर संचालित अवैध कोयला भट्टियों पर कार्यवाही कर उन्हें ध्वस्त करने के निर्देश प्रदान किए थे। जिसकी अनुपालना में शुक्रवार को उपखण्ड क्षेत्र करेड़ा के ग्राम रामपुरिया, ग्राम पंचायत नारेली में 6 अवैध कोयला भट्टियां जो बिलानाम भूमि पर संचालित हो रही थी पर कार्रवाई करते हुए जे.सी.बी. की सहायता से ध्वस्त किया गया। उपखंड अधिकारी ने बताया कि उपखण्ड क्षेत्र करेड़ा में बिलानाम भूमि पर संचालित एवं अन्य अवैध कोयला भट्टियों पर भी आगे लगातार कार्रवाई की जाएगी।

- **प्रशासन ने उपखंड क्षेत्र करेड़ा में छह कोयला भट्टियां धराशाही कराई**
- **जिला कलेक्टर ने एक दिन पहले राजस्व अधिकारियों की बैठक में निर्देश दिए थे**

पाकिस्तान से भारत लौटे तीन भाई-बहन को बीस साल बाद भारत की नागरिकता मिली

अजमेर, (कासं)। पाकिस्तान से भारत लौटे तीन भाई-बहन को 20 साल बाद शुक्रवार को भारत की नागरिकता दी गई। अजमेर कलेक्ट्रेट स्थित एडीएम सिटी गजेंद्र सिंह राठौड़ ने भारत की नागरिकता का प्रमाण-पत्र तीनों को सौंपा। भारत की नागरिकता मिलने के बाद परिवार में खुशी का माहौल है।

एडीएम सिटी गजेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि रमादेवी नाम की महिला जयपुर में रहती थी। उन्होंने पाकिस्तान में शादी की थी। पहले रमादेवी के पति हंसराज और उनके बड़े बेटे को भारत की नागरिकता दी जा चुकी है। शुक्रवार को उनके तीन अन्य बच्चों दिनेश राज, नीलकमल और महेश को भारत की नागरिकता दी गई हैं। तीनों भाई-बहन को प्रमाण पत्र दिया जा चुका है। एडीएम सिटी ने बताया कि तीनों 15 सालों से अजमेर में रह रहे थे। मूल रूप से तीनों पाकिस्तान के नागरिक है। उन्होंने कहा कि पुराने कानून के तहत नागरिकता दी गई है। भारत की नागरिकता मिलने के बाद नीलकमल ने कहा- उसे नागरिकता मिलने के बाद काफी खुशी हो रही है। बहुत छोटी थी, तब पाकिस्तान से भारत आई थी। मेरी पढ़ाई-लिखाई भी यहीं पर पूरी हुई है। अब मुझे खुशी है कि मैं वोट दे पाऊंगी और भारत की योजनाओं का लाभ उठा पाऊंगी। तीनों बच्चों की मां रमादेवी ने कहा कि बच्चों को नागरिकता मिलने के बाद काफी खुशी हो रही है। नागरिकता लेने के लिए 20 साल का इंतजार करना पड़ा। इसके बाद केंद्र सरकार ने इस शुभ मुहूर्त पर नागरिकता देकर तोहफा दिया है।